1

Thursday

Vijay Kumar Jha
Deptt in History
V.S.J College Rajnagar
Degree part III
Paper - VIth

"Din-E-Elahi, Religious idea of Akbar.

मुगल कालीन राजाओ मे सम्राट अकबर का विशेष महत्व है। अकबर का शासन काल अपनी प्रशासनिक क्षमता तथा दूर दृष्टि के लिये काफी चर्चित रहा है। अकबर के समस्त प्रशासनिक ढाँचाओं अकबर के धार्मिक नीति विशेष महत्व की है। अकबर की धार्मिक नीति अपने पितामह बाबर और पिता हुमायुं से कुछ भिन्न था। बाबर एवं हुमायुं कि धार्मिक नीति असहिष्णुता तथा हिन्दुओं के प्रति घृणा की थी। प्रारंभ में अकबर ने भी अपने पूर्वजों के भांति असहिष्णु नीति का अनुसरण किया क्योंकी वे भी एक कट्टर सुन्नी मुसलमान थे। किंतु कालान्तर में उनके विचारों मे परिवर्तन आया और वे धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाया जिसका मुख्य कारण - पैतृक प्रभाव, उदार संरक्षकों का आश्रय, राजपूतों के साथ वैवाहिक संबंध, मुल्ला मौलवियों के शिक्षा से अलग विचारधारा, एवं इबादत खाना का निर्माण था।

अकबर महत्वाकांक्षी सम्राट था तथा विशाल साम्राज्य का निर्माण करना चाहता था, जिसमें सभी धर्मों के बुद्धिमान लोगों कि आवश्यकता थी - जिसमें सभी धर्मों के बीच समन्वय स्थापित करना समय कि मांग थी। अकबर ने इसको भांप लिया और वे धार्मिक कट्टरता तथा बाह्य आडम्बर से छुटकारा पाकर नये धर्म के स्थापना करना चाहता था जिसमें उसे सभी धर्मावलम्बियों का समर्थन मिला। अकबर के धार्मिक विचारों का विकास तीन कालों मे बांटा जा सकता है —

BRUARY 2019
Mo Tu We Th Fr Sa
1 2
4 5 6 7 8 9
11 12 13 14 15 16
18 19 20 21 22 23
25 26 27 28

(1) 1556 से 1563 ई० तक अकबर ने धार्मिकता में वे
(2) 1563 से 1575 ई० तक इस काल में अकबर के धार्मिक

Scanned with Cam

विचारों में परिवर्तन परिलक्षित हुआ।

(3) 1575 से 1582 ई० तक - अकबर विभिन्न धर्मों के सम्पर्क में आये

(4) 1582 से 1605 ई० तक अकबर ने पूर्ण सहिष्णुता की नीति अपनायी अंत में दीन-ए-इलाही धर्म की स्थापना किया।

सिंहासनारोहण के बाद उसने साम्राज्य में धार्मिक मनोमालिन्यता नहीं चाहा। अतः सभी धर्मों में समन्वय आवश्यक माना अतः उसने चाहा की विभिन्न धर्म होते हुये भी उनमें एकता बनी रहे इससे सभी मजहबों के ईश्वर के बीच आदर, शांति, और साम्राज्य की सुरक्षा बनी रहे। फलतः सप्त दानवीन के उपरान्त अकबर ने एक नवीन धर्म संचालित किया जिसका नाम 'दीन-ए-इलाही' रखा यह धर्म रहस्यवाद, अध्यात्म विद्या और प्रकृति पूजा पर आधारित था। इसके सिद्धान्त निम्न थे —

(i) ईश्वर एक है अकबर उसका सर्वोच्च पुजारी है।

(ii) इस धर्म के अनुयायी अभिवादन के लिये - अल्ला-हो-अकबर कह कर सम्बोधन करते थे

(iii) इस धर्म में मृत्योपरान्त भोज जीवन पर्यन्त ही करना पड़ता था

(iv) इस धर्म के लिये मांसाहार निषिद्ध था।

(v) इस धर्म के अनुयायी वृद्ध और अल्पवयस्क कन्याओं से शादी नहीं करते थे

(vi) इस धर्म के अनुयायी सम्राट को साष्टांग प्रणाम करते थे।

(vii) इस धर्म के अनुयायी सूर्य और अग्नि की उपासना करते थे

(viii) रविवार के दिन ही इस धर्म को अपनाया जा सकता था।

(ix) इस धर्म के अनुयायी को सम्राट के प्रति धन-सम्पदा, मान-सम्मान, जीवन और धर्म त्याग करना पड़ता था

उपदेश: —

(1) अपने कानों को मत-मतान्तर में उलझा कर गन्दा नहीं करना

(2) सभी धर्मों एवं मतों का आदर करना

(3) शिकार अथवा युद्ध के अतिरिक्त जीव हिंसा नहीं करना

(4) सूर्य, चन्द्र का आदर करना क्योंकी इनमें प्रकाश का पुंज दीपा है

(5) हर पल परमात्मा का स्मरण करना।

Scanned with Can

Saturday

(6) पल भर भी परमात्मा के स्मरण से अपने को दूर नहीं रखना।

उपरोक्त उपदेशों से परिलक्षित होता है कि वस्तुतः यह कोई धर्म नहीं था बल्कि सभी धर्मों के सार तत्व इस धर्म में छिपा था। सभी धर्मों को समान आदर तथा भाव प्रकट किये गये थे और सभी धर्मावलम्बीयों को समान स्थान दिया गया था।

अकबर कभी भी अपने धर्म को जबरदस्ती जनता पर लागू करना नहीं चाहता था वह चाहता था कि जनता स्वतः धर्म में दीक्षित हो जाय फलतः अनुयायीयों की संख्या कम थी। इनके मात्र 18 अनुयायी थे। अकबर के धार्मिक लोगों ने भी इस धर्म को स्वीकार नहीं किया सिर्फ बीरबल ने ही इस धर्म को स्वीकार किया था। यह धर्म कभी भी जनप्रिय नहीं हो सका और न राजधर्म बन सका। यह धर्म अकबर के मृत्योपरान्त विलुप्त हो गया क्योंकी अकबर के बाद कोई भी सुल्तान इस धर्म का संरक्षक नहीं बना सिर्फ मुसलमान ही नहीं बल्कि हिन्दुओं ने भी इसका समर्थन नहीं किया दीन-ए-इलाही समय से बहुत आगे चल रहा था। इस धर्म कि महत्ता को तत्कालीन जनता नहीं समझ सकी।

अकबर की सर्वधर्म समानता की सोच एक अद्भुत प्रयास था जिसका परिणाम था अकबर के दरबार के नौ रत्न —

(1) बीरबल (2) तानसेन (3) अबुल फजल (4) राजा टोडर मल (5) मुल्ला दो प्याजा, (6) मानसिंह (7) अब्दुल-रहीम खान-ए-खाना, (8) फैजी, (9) फकीर अजीउद्दीन।

इन नौ रत्नों में विद्वान भरी थी तथा विभिन्न ज्ञान एवं धर्म के थे जो अकबर की मधुर व्यवहार एवं सम्मान के कारण नौ रत्नों की शोभा प्रस्तुत करते थे जो अकबर के दरबार के नौ रत्न कहलाते थे इन सभी नौ रत्नों को देखते हुये पता चलता है कि अकबर सर्वधर्म समानता में विश्वास रखते हुये विभिन्न सम्प्रदायों के विद्वानों के आश्रय दाता थे।

Sunday 24

FEBRUARY						2019
Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28		

Scanned with Can